



RE-3237

M. A. (Part - II) Examination

April / May - 2010

Sanskrit : Paper - VIII

(१) भारतीय पाठ समीक्षा

(२) छायाशाकुन्तलम् ।

Time : 3 Hours]

[Total Marks : 70

सूचना :

नीचे दृष्टावेक निशानीवाणी विगतो उत्तरवही पर अवश्य लपवी. Fillup strictly the details of signs on your answer book.	Seat No. :
Name of the Examination :	<input type="text"/>
<input type="text" value="M. A. - 2"/>	<input type="text"/>
Name of the Subject :	<input type="text"/>
<input type="text" value="SANSKRIT - 8"/>	<input type="text"/>
Subject Code No. : <input type="text" value="3"/> <input type="text" value="2"/> <input type="text" value="3"/> <input type="text" value="7"/>	<input type="text"/>
Section No. (1, 2,.....) : <input type="text" value="NIL"/>	<input type="text"/>
	Student's Signature

१ प्राचीन लेखन सामग्री विशेषे यर्था करो. १४
1 Discuss about Ancient Writing Material. 14

अथवा / OR

१ समीक्षित आवृत्ति तैयार करवाभां आवती समस्याओनी यर्था करो. १४
1 Discuss the problems that occur while preparing critical Edition. 14

२ पाठ संपादन अंगेना व्यवहारुं सूचनो पर विस्तृत नोध लपो. १४
2 Write a detailed note on the practical hints on the editing of texts. 14

अथवा / OR

२ हस्तप्रत विज्ञान अटले शुं ? तेनुं महत्व दर्शावी तेना विषयव्याप्ति अंगे सविस्तर वर्णन करो. १४
2 What is Manuscriptology ? Discuss about its importance and vastness. 14

३ भावर हस्तप्रत अंगे सविस्तर भाडिती आपो. १४
3 Discuss in detail about Bower Manuscripts. 14

अथवा / OR

३ अभिज्ञान शाकुन्तलनी समीक्षित आवृत्ति अंगे सविस्तर यर्था करो. १४
3 Discuss in detail critical edition of the Abhijnana Shakuntalam. 14

RE-3237]

1

[Contd....

- ४ गमे ते बे पर नोध लपो : १०
- 4 Write notes on any two : 10
- (१) हस्तप्रतमां पुष्पिकां मडत्व
(1) Importance of colophon in Manuscript
- (२) प्रक्षेपोनुं वर्गीकरण
(2) Classification of Interpolations
- (३) खरोष्ठी धम्मपद
(3) Kharoshthi Dhammapada
- (४) प्राचीन भारतीय संध्यालेखन पद्धति
(4) Ancient Indian Method of Writing Numerals.
- ५ (अ) कोर्ष पण बे श्लोकानो अनुवाद करो : ८
- 5 (a) Translate any two verses : 8
- (१) अहो नः सौभाग्यं यदतिथिवरो दुर्लभतमः
समायातः स्वैरं कथमपि हि पुण्येन महता ।
पुनर्जीवं प्राप्तं विजनमिव सर्वत्र सकलं
भवत्यास्तापस्याश्चरणरजसैवाश्रमपदम् ॥
- (२) सुधासारश्चन्द्रात्किमु मलयजन्मा नु बहुलः
सरोजैः सेको वा विहित इव निष्यन्दशिशिरः ।
प्रियापाणिस्पर्शश्चिरपरिचितो वा किमु मृदुः
कपोले मोहान्मां स्तिमितमपि संजीवयति यः ॥
- (३) आसीत्प्रयाणसमये हि शकुन्तलायाः
संपूर्णगर्भविवशा हरिणी प्रिया या ।
तस्या मया नवशिशुः परिवर्धितोऽसौ
प्रीत्याऽऽश्रमे भ्रमति दर्भयवाम्बुपुष्टः ॥
- (४) प्रियासान्निध्येऽपि क्षण इव पुरा स्वल्पसमयो
न सह्यो यस्यासीद्रतिकलहजन्माऽपि विरहः ।
वियोगे दीर्घेऽस्मिन्स्वकरकृतदोषान्निरवधौ
कथं क्षुद्रान्प्राणान्विकलकरणैर्धारयतु सः ॥
- (ब) 'छायाशाकुन्तलम्' नाटिकां भूय कथातंतुमां करेला परिवर्तन अंगे १०
सविस्तर भाडिती आपो.
- (b) Describe in detail the innovations made in the 10
original theme in Chhayashakuntalam.
- अथवा / OR
- (ब) नीयेनां पर नोध लपो : १०
- (b) Write notes on following : 10
- (१) अनसूया अने प्रियंवदानुं पात्रनिर्णय करो.
(1) Describe the characters of Anasuya and Priyamvada.
- (२) छायाशाकुन्तलम् नाटिकां काव्यसौंदर्य
(2) Poetic beauty of Chhayashakuntalam.